7

तथ्यों की एक्सपायरी तारीख

सुनने में थोड़ा अजीब लगता है कि विज्ञान में दावे, तथ्य, निष्कर्ष सभी परिवर्तनशील हैं। लेकिन विज्ञान का प्रमुख लक्ष्य सत्य के करीब पहुँचना है और इसलिए इसकी सूचनाओं व व्याख्याओं में निरन्तर परिवर्तन अपरिहार्य हैं।

स्कूल या कॉलेज स्तर पर विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों को नई जानकारियों, तथ्यों आदि से अपडेट करने की होड़ मची रहती है, जिनमें से कुछ बाद में गलत साबित हो जाती हैं या उनमें बदलाव हो जाता है।

इस बात को लेकर भी कई अध्ययन हुए हैं कि विज्ञान में कोई तथ्य कितने समय में बासी पड़ जाता है या गलत साबित हो जाता है। तथ्यों के बासी पड़ने की अवधि को भी अर्द्धायु कहा जाता है। इन सबके बारे में विस्तार से जानते हैं इस लेख में।

43

स्थूल अर्थशास्त्र

स्थूल अर्थशास्त्र एक नया विचार है। इस विचार को स्वयं को एक अलग-थलग व्यक्ति के रूप में देखकर नहीं समझा जा सकता। क्योंकि इस विचार में - जो चीज़ एक व्यक्ति के लिए सत्य है वह समाज के लिए सत्य हो यह ज़रूरी नहीं है। कहीं-कहीं सम्पूर्ण क्यों उसके हिस्सों का योग नहीं होता? ऐसे सवाल वास्तव में स्थूल अर्थशास्त्र की बुनियाद हैं। पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था के सन्दर्भ में इन सवालों का सबसे बढ़िया जवाब कीन्स और कालेकी ने दिया है। यदि आप बाज़ार के लिए उत्पादन कर रहे हैं तो बाज़ार में उत्पाद की माँग लोगों की पसन्द-नापसन्द से नहीं बल्कि क्रय क्षमता से तय होती है। यदि सभी नौकरी पेशा लोगों के वेतन में कटौती की जाती है तो उत्पादनकर्ता को समेकित माँग की समस्या का सामना करना पड़ेगा। इसी तरह यदि सब लोग अपनी पूरी आमदनी की बचत करें तो ज़ाहिर है माँग बचेगी ही नहीं। स्थूल अर्थशास्त्र को विस्तार से जानते हैं इस लेख में।

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-33 (मूल अंक-90), जनवरी-फरवरी 2014

इस अंक में

4 | **आपने लिखा**

7 | **तथ्यों की एक्सपायरी तारीख**
सुशील जोशी

12 | **जीवन स्पर्धा, सहजीविता और जैरी का कीड़ा**
ऐड्रियन फोर्सिथ और कैन मियाटा

23 | **छिपकली और चींटी का दीवार पर चलना**
सवालीराम

27 | **एक बातचीत कृष्ण कुमार के साथ**
दिशा नवानी

43 | **स्थूल अर्थशास्त्र**
अमित भादुड़ी

61 | **साहित्य और पढ़ना सीखना के इर्द-गिर्द...**
सुशील शुक्ल

74 | **सेनिन**
र्‌यूनोसुके आकुतागावा

82 | **संदर्भ इंडेक्स अंक 85-90**

89 | **बोन्साई**
अम्बरीष सोनी